1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एनो मा नि गाम्।

अथर्ववेद : 5/3/4

हे प्रभो! मैं पापी न बनूं।

O God! I should never become a sinner.

वर्ष 40, अंक 33 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 जून, 2017 से रविवार 18 जून, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के संयुक्त तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा

6-7-8 अक्तूबर, 2017 (शुक्र-शनि-रवि) : मांडले (म्यांमा-बर्मा)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होने के लिए अभी से तैयारी आरम्भ करें

विस्तृत जानकारी एवं यात्रा विवरण आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा

आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया, फिजी एवं न्यूजीलैंड की आर्यसमाजों का

क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन आस्ट्रेलिया

1-3 सितम्बर : आर्यसमाज सैन्ट्रल, न्यू साउथ वेल्स

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा क्षेत्र की समस्त आर्यसमाजों का

27वां आर्य महासम्मेलन अमेरिका

28-29-30-31 जुलाई, 2017 : न्यूयार्क

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्यसमाजों की क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दोपहर 3 से सायं 7:15 बजे तक दिल्ली की आर्यसमाजों की क्षेत्रवार गोष्ठियों का आयोजन किया गया है। आपसे निवेदन है कि आप अपनी आर्यसमाज के सभी महत्त्वपूर्ण अधिकारियों तथा सक्रिय महिला पदाधिकारियों को भी साथ लाएं ताकि चर्चाएं तथा सूचनाएं समस्त आर्यजनता तक सरलता से पहुँचाई जा सके और गोष्ठी के उद्देश्यों को पूर्ण किया जा सके। आपसे यह भी निवेदन है कि यदि आप किसी कारणवश अपने क्षेत्र की गोष्ठी में न पहुंच पाएं, तो अन्य क्षेत्र की गोष्ठी में अवश्य ही पहुंचने का प्रयास करें। तिथियों में परिवर्तन सम्भव है। गोष्ठी के उपरान्त समस्त उपस्थित महानुभावों के लिए सुन्दर प्रीतिभोज की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी। – ***महामन्त्री***

पश्चिम दिल्ली -1 गोष्ठी	पश्चिम दिल्ली-2 गोष्ठी	उत्तरी दिल्ली गोष्ठी	समय एवं कार्यक्रम
आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, दिल्ली **रविवार : 25 जून, 2017** व्यवस्थापक : श्री बलदेव सचदेवा जी	आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली **रविवार : 2 जुलाई, 2017** व्यवस्थापक : श्री सतीश चड्ढा जी	आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स, दिल्ली **रविवार : 9 जुलाई, 2017** व्यवस्थापक : श्री योगेश आर्य जी	**चाय/जलपान :** दोपहर 2:30 बजे **प्रथम सत्र** सायं 3 से 5 बजे **चाय/नाश्ता :** 5 बजे **द्वितीय सत्र :** 5:15 से 7:15 बजे **भोजन :** 7:30 बजे
पूर्वी दिल्ली गोष्ठी	**दक्षिण दिल्ली गोष्ठी**	**उत्तर-पश्चिम दिल्ली गोष्ठी**	
आर्यसमाज सूरजमल विहार **रविवार : 16 जुलाई, 2017** व्यवस्थापक : श्री अशोक कुमार गुप्ता जी	आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट-2 **रविवार : 23 जुलाई, 2017** व्यवस्थापक : श्री सहदेव नांगिया जी	आर्यसमाज रोहिणी सै.7 दिल्ली **रविवार : 20 अगस्त, 2017** व्यवस्थापक : श्री सुरेन्द्र आर्य जी	

अन्तराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर उत्साह के साथ करें
योग कक्षाएं, योग चर्चा, आसन, प्राणायाम, व्यायाम का आयोजन

विश्व की समस्त आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुलों, विद्यालयों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के तृतीय आयोजन 21 जून 2017 के अवसर पर सार्वजनिक स्थलों, सत्संग हॉल, पार्क, सामुदायिक भवन इत्यादि में सामूहिक रूप से– 1. योग कक्षाएं 2. योग के संबंध में वैदिक चर्चा 3. आसन 4. व्यायाम 5. प्राणायाम 6. सूर्य नमस्कार आदि यौगिक क्रियाओं का अनिवार्य रूप से आयोजन करें व अपने क्षेत्र के जन साधारण को आमंत्रित करके योग को अपनाने की अपील एवं संकल्प कराएं।

निवेदक : सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान)सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रकाश आर्य (मंत्री) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आधुनिक भारत – ले चलें शिखर की ओर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के आर्य विद्यालयों का सामूहिक सांस्कृतिकोत्सव

शनिवार 22 जुलाई, 2017 – प्रातः10 से 2 बजे तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

समस्त विद्यालय विद्यार्थियों के परिवारों सहित अवश्य पहुंचे

निवेदक धर्मपाल आर्य, प्रधान विद्यामित्र ठुकराल, कोषाध्यक्ष विनय आर्य, महामन्त्री सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता

वेद-स्वाध्याय

अकेला खाने वाला पापी

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।। –ऋ. 10/117/6
ऋषिः **आङ्गिरसो भिक्षुः।।** देवता – **इन्द्रः, धनान्नदानप्रशंसा।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ – अप्रचेताः = दुर्बुद्धि मनुष्य **मोघम्**= व्यर्थ ही **अन्नम्** = भोग-सामग्री को **विन्दते**= पाता है। **सत्यं ब्रवीमि** = सच कहता हूं कि **सः**= वह भोग-सामग्री **तस्य** = उस मनुष्य के लिए **वध इत्** = मृत्यु रूप ही होती है – उसका नाश करने वाली ही होती है। ऐसा दुर्बुद्धि **न अर्यमणं पुष्यति** = न तो यज्ञ द्वारा अर्यमादि देवों की पुष्टि करता है **नो सखायम्** = और न ही मनुष्य-साथियों की पुष्टि करता है। सचमुच वह **केवलादी** = अकेला खाने-भोग करनेवाला मनुष्य **केवलाघो भवति** = केवल पाप को ही भोगनेवाला होता है।

विनय – संसार में धनी दीखने वाले दुर्बुद्धि (पापबुद्धि) मनुष्यों के पास जो अन्न-भण्डार और नाना भोग-सामग्री दिखाई देती है, क्या वह भोग्य-सामग्री है? अरे, वह सब भोग-विलास का सामान तो उनकी 'मौत' है। वे भोग्य-वस्तुएं नहीं हैं, किन्तु उनको खा जाने वाले ये इतने उनके भोक्ता हैं, भक्षक हैं। भोग्य-सामग्री का मनोहर रूप धरके आया हुआ उनका काल है, उन्हें खा जाने के लिए आया हुआ काल है। मनुष्यो! तुम्हें इस विचित्र बात पर विश्वास नहीं होता होगा, किन्तु मैं सच कहता हूं, सच कहता हूं और फिर सच कहता हूं कि पापी, दुर्बुद्धि पुरुष के पास एकत्र हुआ सब सांसारिक भोग का सामान उसकी मृत्यु का सामान है, केवल मृत्यु का ही सामान है; इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है, क्योंकि वह पुरुष अपने इस धन-ऐश्वर्य द्वारा केवल अपने देह को ही पोषित करता है। न तो वह उस द्वारा अपने अन्य मनुष्य-भाइयों को पोषित करके अपने स्वाभाविक यज्ञ-धर्म को पालता है, न ही वह अर्यमादि देवों के लिए आहुति देकर आधिदैविक जगत के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित रखता है। यदि वह आधिदैविक आदि जगत् को पोषित करता हुआ इसके यज्ञ-शेष से अपने को पोषित करे, तब जो भोग-सामग्री उसके लिए अमृत हो सकती थी, वही भोग-सामग्री उसकी 'मौत' बन जाती है। मनुष्यो! याद रक्खो कि अकेला भोगनेवाला, औरों को बिना खिलाये स्वयमेव अकेला भोगनेवाला मनुष्य, केवल पाप को ही भोगता है जबकि चारों ओर असंख्य पुरुष एक समय भी भरपेट भोजन न पा सकने वाले, भूखे-नङ्गे, झोंपड़ों में पड़े हों तो उनके बीच में जो हलुवा-पूरी खानेवाला, महल में रहने वाला, पलङ्ग पर सोने वाला 'अप्रचेताः' पुरुष है उससे तुम क्यों ईर्ष्या करते हो? तुम्हें बेशक वह मज़े में हलुवा-पूरी खाता हुआ दिखाई देता है, पर तनिक सूक्ष्मता से देखो तो वह बेचारा तो केवल अपने पाप को भोग रहा होता है, वह केवल शुद्ध पाप का भागी होता है और इस अयज्ञ के भारी पाप-बोझ को वह अकेला ही उठाता है; इसमें उसका कोई और साथी नहीं होता। ''केवलाघो भवति केवलादी'' यह संसार का परम सत्य है। इसे कभी मत भूलो! (शरीर, मन और आत्मा तीनों को पुष्ट करने वाले) सच्चे भोजन में और (शीघ्र ही विनाश को पहुंचा देने वाले) पापमय भोजन में भेद करो! पाप से सना हुआ हलुवा-पूरी खाने की अपेक्षा रूखा-सूखा खाना या भूखा रहना हज़ारों गुणा श्रेष्ठ है। पहले प्रकार का भोजन मौत है; दूसरा अमृत है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दुनिया हमारी रीति से ही बच सकती है

दुनिया के मशहूर भौतिकशास्त्री स्टीफन हॉकिंग ने 5 मई को दुनिया को चेतावनी देते हुए कहा था कि धरती के पास सिर्फ 100 साल बचे हैं, इंसान को दूसरे ग्रह में अपना ठिकाना तलाशना होगा। ऐसे में सवाल उठता है क्या धरती का काउंटडाउन शुरू हो गया है? क्या धरती की उम्र सिर्फ 100 साल बची है? क्या 22वीं शताब्दी धरती की तबाही के नाम होगी? क्या मानव सभ्यता धरती पर पूरी तरह 100 साल में खत्म हो जाएगी? सवाल बहुत सारे हैं क्योंकि सवाल सिर्फ एक जिंदगी का नहीं बल्कि पूरी मानव सभ्यता का है। धरती में जलवायु परिवर्तन, तेजी से बढ़ती जनसंख्या, करीब से गुजरते उल्का पिंडों के टकराने का खतरा तो युद्ध उन्माद में डूबे आक्रामक होते इंसानों के हाथों में न्यूक्लियर हथियारों का होना अनिश्चित भविष्य का संकेत है। ऐसे में हॉकिंग का सौ साल का अल्टिमेटम ही सिहरन पैदा करने के लिये काफी है।

धरती के पर्यावरण का चीरहरण आदि से अंत की तरफ बढ़ रहा है। धरती की खूबसूरती में इंसानी अतिक्रमण ही उसके बेदखल होने की वजह बनेगा। कटते जंगल और बढ़ते सीमेंट के जंगलों से बने शहरों से निकलता विषैला धुआं, फैक्ट्रियों, कारखानों और मोटर-कारों से निकलता जहर आब-ओ-हवा को गैस चैंबर बनाता जा रहा है। न जमीन पर जीवों के लिये साफ जल और वायु बचा है और न पानी के भीतर मौजूद जीवों के लिये पानी। समुद्र के किनारों पर व्हेल मछलियों का मृत मिलना तो आसमान से पक्षियों का बेसुध होकर जमीन पर गिरना अजब-गजब खबरों में गुम हो जाता है।

लेकिन इन खतरों के बावजूद भी कोई जंग के लिए संसाधन जुटा रहा है तो कोई मुक्त व्यापार का रास्ता खोजकर दुनिया पर शासन करना चाह रहा है। लेकिन इस समय कुछ ऐसे भी लोग हैं जो मानवता और उसके जीवन के लिए आने वाली भावी पीढ़ी के लिए साफ हवा, पीने योग्य पानी और स्वच्छ वातावरण कैसे रहे इस पर शोध कर रहे हैं ताकि आने वाली मानवता उन्मुक्त साँस ले सके। परन्तु जब सांस ही जहरीली हो जाए तब उससे जीवन की आशा क्या की जा सकती है? क्योंकि सांस की सार्थकता वातावरण की मुक्तता में निहित है। आज वातावरण मुक्त है कहाँ? मुक्त वातावरण का अर्थ है आवश्यक गैसों की मात्रा में सन्तुलन का बना रहना। चूँकि पेड़ एवं जन्तु दोनों ही वातावरण-सन्तुलन के प्रमुख घटक हैं, इसलिए दोनों का ही सन्तुलित अनुपात में रहना परमावश्यक है।

वेदों में वृक्ष-पूजन का विज्ञान है। इसके विपरीत, आज पेड़-पौधों की निर्ममता-पूर्वक कटाई से वातावरण में कार्बन-डाइऑक्साइड की मात्रा में अतिशय वृद्धि हो रही है। इससे तापमान अनपेक्षित मात्रा में बढ़ता जा रहा है, जो पर्यावरण के लिए संकट का सूचक है।

यदि बात जलवायु परिवर्तन से लेकर पर्यावरण से जुड़े संवेदनशील मामले पर हों तो हमें दुनिया को वेद का मार्ग बताने में हिचक नहीं होनी चाहिए। वेद जो सफल जीवन का निर्माता-अग्रणी नेता है। उसे स्वयं आगे आकर समस्त परिवेश का हित करनेवाला, मनुष्य और समाज का सच्चा संचालक माना गया है। पृथ्वी पर होने वाली कुछ रासायनिक क्रियाओं से पर्यावरण में फैलने वाले प्रदूषण के कारण आकाश स्थित ओजोन की परत में एक बड़ा छिद्र हुआ है। यदि इसी गति से और छिद्र होते रहेंगे तो पैराबैंगनी किरणों को रोकना संभव नहीं रहेगा। मतलब साफ है कि जहरीली किरणों को रोकने का कोई उपाय हमारे पास नहीं रहेगा और इसका परिणाम यह होगा कि कैन्सर, आँखों की ग्रन्थि आदि भयंकर रोगों का शिकार होंगे।

सब जानते हैं आज जब हमें प्यास लगती है तो उसे बुझाने के लिए बीस रुपये की मिनरल वाटर की बोतल खरीदनी पड़ती है। कारण आज हमारे आस-पास पानी दूषित हो चुका है लेकिन कल अगर हम स्वच्छ वायु के लिए ऑक्सीजन सिलेंडर पीठ पर बांधकर चले तो इस सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता। यदि कोई सोच रहा हो कि नहीं ऐसा तो नहीं होगा तो उनसे बस यह सवाल है कि क्या आज से बीस वर्ष पहले किसी ने सोचा था कि हमें साफ पानी के लिए घरों में फिल्टर आदि लगाने पड़ेंगे? यदि आज प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश के विरुद्ध सामूहिक रूप से कोई उपाय नहीं किया जायेगा तो इस युग में मानव जीवित नहीं रह पायेगा।

प्रकृति के इस भयावह असंतुलन से बचने के लिए जहाँ विश्व के लोग विज्ञान के ओर दौड़ रहे हैं वहीं अनेकों वैज्ञानिक उपाय समाधान और आशा की खोज में हमारे वेदों की ओर लौट रहे है। रूस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक शिरोविच ने लिखा है कि गाय के घी को अग्नि में डालने से उससे उत्पन्न धुंआ परमाणु विकिरण के प्रभाव को बड़ी मात्रा में दूर कर देता है। हमारी आध्यात्मिक पद्धति में इस क्रिया को यज्ञ कहा जाता है। जलती शक्कर में वायु शुद्ध करने की बड़ी शक्ति विद्यमान है। इससे चेचक, हैजा, तपेदिक आदि बीमारियाँ तुरन्त नष्ट हो जाती हैं। पर्यावरण पर शोध करने वाले फ्रांस के वैज्ञानिक ट्रिलवर्ट ने यह बात दावे के साथ लिखी है कि मुनक्का, किशमिश आदि फलों को (जिनमें शक्कर अधिक होती है) को जलाकर देखा तो पता चला कि आन्त्रिक ज्वर के कीटाणु 30 मिनट और दूसरे कीटाणु एक या दो घंटे में नष्ट होते हैं। पर्यावरण के इस विज्ञान में डॉ. कर्नल किंग कहते हैं कि केसर तथा चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटाणु भी समाप्त हो जाते हैं।

आज यज्ञ विज्ञान को दुनिया के बड़े-बड़े शोधकर्ता पर्यावरण को बचाने में एकमात्र सबसे सरल उपयोग का साधन बता रहे हैं। हमारे तत्त्वदर्शी ऋषियों के निर्देशों के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर पर्यावरण-असन्तुलन की समस्या ही उत्पन्न नहीं हो सकती। पर्यावरण-सन्तुलन से तात्पर्य है जीवों के आसपास की समस्त जैविक एवं अजैविक परिस्थितियों के बीच पूर्ण सामंजस्य। इस सामंजस्य का महत्त्व वेदों में विस्तारपूर्वक वर्णित है। विश्व विख्यात इतिहासकार आर्नोल्ड टॉयनबी ने मानवता के लिए भविष्य की राह देखी थी। उन्होंने कहा है कि बीसवीं सदी के अंत तक विश्व पर पश्चिमी प्रभुत्व रहेगा किन्तु 21वीं सदी में भारत उन देशों को जीत लेगा जिन्होंने कभी उसे पराजित किया था और भारत की यह जीत उसके आध्यात्म के बल पर होगी, हथियारों के बल पर नहीं। टॉयनबी का स्पष्ट विचार था कि मानवता को यदि आत्मविनाश से बचना है तो उसे पश्चिमी तौर-तरीके से प्रारम्भ हुए अध्याय का समापन भारतीय रीति-रिवाज और वेदों के माध्यम से करना ही होगा। बात सच होती दिख रही है। दुनिया भारतीय आध्यात्म में संस्कृति की सुगंध अनुभव कर रही है। लेकिन इसमें आप और हम मिलकर आहूति डालेंगें तभी मानवता बच सकती है

– सम्पादक

हुर्रियत की जड़ों पर प्रहार ?

.........आतंक का यह पेड़ इतना फला-फूला कैसे तो इसे समझने के लिए जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारुक अब्दुल्ला का यह बयान काफी है कि ''हुर्रियत वालों! हम तुम्हारे साथ हैं, एक हो जाओ, आगे बढ़ो, हमें अपना दुश्मन मत समझो'' इससे साफ हो जाता है कि देश के अन्दर अन्य आतंकी संगठनों नक्सलवाद, माओ, बोडो आदि की तरह हुर्रियत को भी पर्दे के पीछे से राजनितिक संरक्षण प्राप्त होना नकारा नहीं जा सकता।.........

भारतीय जाँच एजेंसी यानी एनआईए की टीम ने कश्मीरी अलगाववादी नेताओं पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। एनआईए की टीम ने दिल्ली के चांदनी चौक, बल्लीमारान सहित आठ ठिकानों समेत कुल 22 ठिकानों पर छापेमारी की है। एनआईए ने अलगाववादी नेताओं के कश्मीर के 14 और दिल्ली-हरियाणा स्थित 8 ठिकानों पर एक साथ छापे मारे। छापेमारी में एनआईए ने 1.5 करोड़ रुपये कैश के अलावा कई दस्तावेज बरामद किए। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि एनआईए को इन ठिकानों से लश्कर ए तैयबा और हिज्बुल के लैटरहेड, पेन ड्राइव और लैपटॉप मिले। इसके बाद जिन लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है उन लोगों में सबसे बड़ा नाम अलगाववादी नेता सैयद अली शाह गिलानी का है। एनआईए ने अपनी पकड़ मजबूत करते हुए शाह गिलानी और आतंकी हाफिज सईद के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। इसके साथ ही एनआईए ने अलगव वादी नेता यासिन मलिक पर भी अपनी पकड़ पहले से मजबूत की है।

हालाँकि यह कहा जा रहा कि ये छापे कोई अप्रत्याशित नहीं थे। इससे पहले भी सीबीआई और इनकम टैक्स की ओर से अलगाववादी नेताओं के घर पर छापे पड़ चुके हैं और इसके बाद उन पर आगे कोई कार्यवाही नहीं हुई। इससे लोगों में यह विश्वास बैठ गया है कि ये कार्यवाही अलगाववादियों पर दबाव डालने के लिए हुई थी। लेकिन इस बार एनआईए ने सिर्फ अलगाववादी नेताओं तक ही छापेमारी को सीमित नहीं रखा है। उसने उनके अलावा कुछ व्यापारियों को भी निशाना बनाया है। खास तौर पर उन्हें जिनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर सीमा पार के लोगों से व्यापारिक सम्बन्ध हैं।

श्रीनगर, जम्मू, दिल्ली और हरियाणा में कई जगहों पर पड़े राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के छापों ने कश्मीर में बहस छेड़ दी है। कुछ लोगों का मानना है कि इस कदम से सरकार को ''चरमपंथियों को मिलने वाले फंड'' के स्रोतों के बारे में जानकारी मिलेगी और वह उन्हें धर-दबोचेगी। एनआईए के सूत्रों की मानें तो देश में आने वाला यह पैसा कई आतंकी संगठनों सहित अलगाववादियों तक पहुंचता है। हुर्रियत कांफ्रेंस, जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट, इस्लामिक स्टूडेंट फ्रंट, हिजबुल मुजाहिदीन, जैश ए मुजाहिदीन, जमीयतुल मुजाहिदीन सहित कई संगठनों को यह पैसा पहुंचाया जाता है।

राष्ट्रीय जांच एजेंसी, ईडी सहित कश्मीर की पुलिस अलगाववादियों को मिलने वाली आर्थिक मदद की जांच में जुटी है। साथ ही ये सभी एजेंसियां मिलकर खुफिया एजेंसी को इस मामले की जांच में पूरी मदद कर रही हैं। अधिकारी बता रहे हैं कि जम्मू-कश्मीर में शांति के माहौल को बिगाड़ने के लिए सीमापार से इन अलगाववादियों को बड़ी आर्थिक मदद मिलती है। ऐसे में वादियों की फिजा को बिगाड़ने के लिए इस्तेमाल हो रहे पैसे की जांच इस सरकार का मुख्य एजेंडा है।

आखिर कौन है हुर्रियत कांफ्रेंस? कोई राजनैतिक दल, संगठन या समाजसेवी संस्था? अक्सर लोग इस सवाल को राजनीति और मीडिया की लालटेन के नीचे बैठकर उसके उजाले में इसका हल ढूंढते हैं, आखिर कैसे अलगाव और आजादी के नाम कश्मीर का वैचारिक आतंकी संगठन भारत जैसे एक विशाल राष्ट्र के लोकतंत्र उसके संविधान को एक लम्बे अरसे से चुनौती दे रहा है? हुर्रियत कांफ्रेंस की जड़ों को समझना हो तो कश्मीर में क्या कैसे कब घटा यह याद करना होगा। साल 1988-89 के बीच कश्मीर की आजादी को लेकर जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट या जेकेएलएफ ने कश्मीर की बर्फीली वादियों में बारूद की जो गर्माहट पैदा की, जो जल्दी ही आग बनकर वहां के हरे भरे चिनार और भारत की सम्प्रभुता को झुलसाने लगी थी। आग की इस तपिश से जब कश्मीर का हिन्दू समुदाय झुलसने लगा तब पड़ोसी देश पकिस्तान ने हाथ तापने शुरू किए। तब इसे दुनिया ने भी पहली बार महसूस किया।

हुआ यह कि जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के कुछ नौजवानों ने कश्मीर में आजादी के नाम पर भारतीय सुरक्षा बलों से लड़ना शुरू किया। शुरू में सेना को इन लड़ाकों को पहचानने में दिक्कत पेश आई। फिर अचानक एक के बाद एक जेकेएलएफ के लड़ाके मारे जाने लगे। तब इन लोगों ने कश्मीरी पंडितों के खिलाफ अभियान छेड़ दिया। भारतीय सुरक्षा बल बेहद मुस्तैदी से अतिवादियों के सफाए में लगे थे। इससे पहले की जेकेएलएफ के झंडे तले जमा हुई कश्मीरी जनता अपने घरों को लौटती इस्लामी-अतिवादियों के गिरोहों ने उनका स्थान ले लिया। इन्हें पकिस्तान की आईएसआई का समर्थन हासिल था। इसी स्थिति के गर्भ से हुर्रियत का जन्म होता है, जिसने अलगाववाद के लिए लड़ रहे अलग-अलग संगठनों को एक परचम तले इकठ्ठा किया। नाम दिया 'ऑल पार्टीज हुर्रियत कॉन्फ्रेंस' जिसके बाद भारत सरकार का रुख नरम हुआ और नतीजा 89 से 93 यानी पांच वर्षो में लापरवाहियों की खाद से ताकत हासिल करता यह छोटा सा पौधा आज 28 वर्षों में एक ऐसा दरख्त बन चुका है, जिसे उखाड़ पाना भारत सरकार के लिए सर दर्द बन चुका है।

मूल-प्रश्न यह भी है कि आतंक का यह पेड़ इतना फला-फूला कैसे तो इसे समझने के लिए जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारुक अब्दुल्ला का यह बयान काफी है कि ''हुर्रियत वालों! हम तुम्हारे साथ हैं, एक हो जाओ, आगे बढ़ो, हमें अपना दुश्मन मत समझो'' इससे साफ हो जाता है कि देश के अन्दर अन्य आतंकी संगठनों नक्सलवाद, माओ, बोडो आदि की तरह हुर्रियत को भी पर्दे के पीछे से राजनैतिक संरक्षण प्राप्त होना नकारा नहीं जा सकता। सच कहें तो कश्मीर का समाधान न हुर्रियत चाहती है न कश्मीर पर हर समय आंसू बहाने वाला पाकिस्तान। बस इन लोगों को अपने-अपने हिस्से का कश्मीर भर चाहिए।

भारतीय राजनीति गलत या सही। इस बात को अलग रखकर चर्चा करें तो आज सरकार जिन भी तेवरों के साथ आगे बढ़ रही है, इससे कश्मीर में डूबते शिकारे को बचाने में एक आशा की किरण नजर आ रही है। अगर बदलाव का यह शिकारा भारत सरकार अपनी ओर खींचने में कामयाब हुई तो पथराव करने तक को रोजगार की तरह देखने पर मजबूर कश्मीरी, अपने लीडरों के मुख पर खुद तमाचा जड़ देंगे। - ***राजीव चौधरी***

बोध कथा

देवताओं की विजय का रहस्य

एक बार देवता और दैत्य (असुर) लोगों में बहुत बड़ा युद्ध हुआ। कई वर्ष तक युद्ध होता रहा। अन्त में देवता लोग हार गये, दैत्य जीत गये। देवता तब दुःखी होकर एक डेपुटेशन बनाकर विष्णु महाराज के पास पहुंचे; बोले-''महाराज! हम हार गये, दैत्य लोग जीत गये। कोई ऐसा उपाय बताइये कि वे हार जाएं और हमारी जीत हो जाय।''

विष्णु महाराज ने पूछा- ''हे देवताओं! दैत्य लोग यदि जीते हैं तो उसका कारण क्या है?''

देवताओं ने कहा-''दैत्य लोग सत्य धर्म को माननेवाले हैं, वेद-मार्ग पर चलने वाले हैं, तप करते हैं, इसलिये वे जीत गये। अब कोई ऐसा उपाय बताइये कि वे हार जायें और हमारी विजय हो जाय।''

विष्णु महाराज ने कहा- ''इसका तो एक ही उपाय है कि दैत्य लोगों में माया-मोह उत्पन्न कर दिया जाय। इस माया-मोह में फंसकर वे वेद-मार्ग को भूलेंगे। उसके भूलने से ही उनका सर्वनाश होगा।''

देवताओं ने पूछा-''यह माया-मोह उनमें किस प्रकार उत्पन्न होगा?''

विष्णु महाराज ने कहा-''मैं इसका प्रबन्ध करता हूं। एक ऐसी वस्तु बनाता हूं, जो उन्हें मोहित कर दे।''

यह प्रबन्ध हो गया। दैत्य लोग मोह-माया के जाल में फंस गये। भूल गये वेद का मार्ग, भूल गये अपना-अपना धर्म, भूल गये तप और दीक्षा की बात। फिर से युद्ध आरम्भ हुआ और इस बार दैत्य लोग हार गए। देवताओं की जीत हो गई।

जो व्यक्ति वेद-मार्ग को छोड़ देता है, जो त्रयी विद्या से विमुख हो जाता है, वह नंगा हो जाता है। उसकी फिर किसी भी प्रकार रक्षा नहीं हो सकती। इस संसार में वही नंगा है, जो वेद और शास्त्रों से परे हट गया है। जो इनका स्वाध्याय नहीं करता, वह पापी और नंगा है।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

सारथी चैनल पर प्रसारित हुई एक घंटे की विशेष परिचर्चा - पर्यावरण पर यज्ञ के प्रभाव

''यह धुआं जरुरी है''

देखने हेतु लॉगऑन करें
https://www.youtube.com/watch?v=e7JI7bcFLg4

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में

सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका स्वाध्याय शिविर सम्पन्न

गुरुकुल पौंधा देहरादून में दिनांक 29 मई से 1 जून 2017 तक स्वाध्याय शिविर एवं 2 से 5 जून तक गुरुकुल पौंधा का वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर में ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का स्वाध्याय आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) द्वारा सम्पन्न हुआ। 2-2 घण्टे के सत्रों में ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के उपासना प्रकरण का सम्पूर्ण स्वाध्याय हुआ। शिविर में पहुंचे शिविरार्थियों ने इस आयोजन के लिए आयोजनकर्ता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल पौंधा, आचार्य धनञ्जय शास्त्री, आचार्य सोमदेव शास्त्री, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं संयोजक श्री सुखबीर सिंह आर्य की दिल से प्रशंसा की तथा भविष्य में इस प्रकार के शिविर आयोजित करने की अपील करते हुए कहा कि ऐसे शिविर काफी लाभकारी हैं तथा इन शिविरों से स्वाध्याय करने का तरीका भी ज्ञात होता है। शिविर में दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों से लगभग 150 सदस्यों ने भाग लिया जो सराहनीय है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक स्थानों से स्वाध्यायप्रेमी आर्यजन शिविर में पधारे जो आर्य जनों की स्वाध्याय के प्रति रुचि को दर्शाती है।

डॉ. सोमदेव शास्त्री ने शिविर का उद्घाटन करते हुए बताया कि 'महर्षि दयानन्द जी के सभी ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण हैं मगर सभी ग्रन्थों में सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका एवं संस्कार विधि का प्रमुख स्थान है। विगत वर्ष इसी स्थान पर सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय शिविर सम्पन्न हुए हैं। इस वर्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से गुरुकुल के तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव से पूर्व चार दिवसीय ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का आयोजन बड़े धूमधाम से किया जा रहा है। यह बड़े सौभाग्य की बात है कि इस शिविर में दूर-दूर से आर्यजन पधारे हैं।' स्वाध्याय शिविर के साथ-साथ प्रत्येक दिन सुबह-शाम डॉ. विनोद शर्मा जी के निर्देशन में योग कक्षाओं का आयोजन भी किया गया तथा प्रतिदिन डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। रात्रिकालीन सत्र में मनोविनोद कार्यक्रम चला जिसमें आर्यजनों ने भजन, कविता, चुटकुले आदि सुनाये जो मनोरंजन की दृष्टि के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी रहे। गुरुकुल पौंधा में सभी शिविरार्थियों के लिए रहने, प्रातःराश, भोजनादि एवं स्नानादि की सुन्दर व्यवस्था की गयी जिसकी सभी ने सराहना की। सभा की ओर से स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. धनञ्जय शास्त्री एवं गुरुकुल के सभी आचार्यों एवं ब्रह्मचारियों का जिनके सहयोग से शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ, का धन्यवाद व्यक्त किया गया।

- सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक

स्वाध्याय शिविर में अध्ययन कराते आचार्य सोमदेव शास्त्री जी। शिविर में उपस्थित आर्यजन एवं धन्यवाद व्यक्त करते संयोजक श्री सुखबीर सिंह आर्य जी ।

आर्य विद्या परिषद दिल्ली द्वारा दक्षिण दिल्ली के विद्यालयों की कार्यशाला ग्रेटर कैलाश पार्ट-2 में सम्पन्न

वैदिक शिक्षा ही 'मनुर्भव' अर्थात् मानव बनने की शिक्षा देती है - श्री सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता

12 मई 2017 को आर्य शिशुशाला ग्रेटर कैलाश पार्ट-2 की आर्य समाज के सभागार में दक्षिण दिल्ली के विद्यालयों की कार्यशाला सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री लखन पाल जी, श्री राजीव चौधरी (उप प्रधान), विजय भाटिया (मंत्री), राजेन्द्र कुमार वर्मा जी, विद्यालय की मैनेजर श्रीमती अमृत पॉल, प्रि. श्रीमती अर्चना वीर, श्रीमती अर्चना पुष्पकरना, श्रीमती बबीता मेहरा, श्री नरेन्द्र कुमार नारंग जी, श्रीमती वीना आर्या एवं श्रीमती तृप्ता शर्मा उपस्थित रहीं।

इस कार्यशाला में आर्य शिशु-शाला ग्रेटर कैलाश पार्ट-1, रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजिनी नगर, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, अमर कालोनी, आर्य पब्लिक स्कूल, श्री निवासपुरी, दयानन्द माडल स्कूल, मालवीय नगर, सुशील राज आर्य विद्या ज्ञान मन्दिर ईस्ट ऑफ कैलाश की लगभग 80 अध्यापिकाओं ने भाग लिया। यह कार्यशाला 9.30 बजे से शुरू होकर 1.15 बजे तक चली।

इस अवसर पर आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र रैली जी ने अपने दो घण्टे के व्याख्यान को गायत्री मंत्र (अर्थ सहित) से प्रारम्भ किया। उन्होंने बताया कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। वेद ज्ञान व विज्ञान का भण्डार है। इसमें अधिकांश मंत्र राजाओं के लिए एवं शिक्षण कैसा होना चाहिए यह बताया गया है। अतः वेद का पठन, पाठन हर शिक्षक का कर्त्तव्य है। वेद कहता है 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनो। इसके लिए आकर्षक व्यक्तित्व होना चाहिए। मेहनत व लगन के साथ पढ़ाना चाहिए। बच्चों की ऊर्जा शक्ति को कैसे बढ़ाएं इस पर विस्तृत चर्चा की। बहुत ही मनोरंजन पूर्ण ढंग से अपनी बात कही। भजन तथा हिन्दी में संध्या करवाई जिसका सभी ने आनन्द लिया।

इसके पश्चात् श्रीमती अनु वासुदेव डायरेक्टर अखिल भारतीय दयानन्द सेवा आश्रम ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा- शिक्षक ही देश का रोल मॉडल होते हैं। बच्चे उन्हें अपना पथप्रदर्शक मानते हैं। उन्होंने प्रोजेक्टर के द्वारा बताया कि एक आदर्श शिक्षिका किस प्रकार बच्चों को उन्नति के पथ पर ले जा सकती है। बच्चों के साथ सकारात्मक व्यवहार होना चाहिए। उन्हें हर काम में शाबाशी देनी चाहिए इससे उन्हें प्रोत्साहन मिलता है। श्री विनय आर्य जी ने कहा- हम बच्चों को सही मार्ग दर्शन देते हैं तो हमें आत्मसंतुष्टि होती है। यज्ञ विज्ञान है हम बच्चों में कोई बात जबरदस्ती नहीं थोप सकते। प्रयोग व सिद्ध करके बताएं कि यज्ञ विज्ञान है। हमने अनेक स्थानों पर शोध किया है जिससे पता चला कि यज्ञ के पश्चात् कितना प्रदूषण कम हुआ। अन्त में शान्ति पाठ के साथ कार्यशाला सम्पन्न हुई।

- संयोजिक

शिक्षक कार्यशाला को सम्बोधित करते प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी एवं शिविर में उपस्थित दक्षिण दिल्ली के आर्य विद्यालयों की अध्यापिकाएं।

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में वार्षिक व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर सम्पन्न

शिविर की दैनिक दिनचर्या घर पर भी पालन करेंगे तभी महान बनेंगे – महाशय धर्मपाल

वीरांगनाओं ने लिया संकल्प – 'अपने राष्ट्र और संस्कृति की रक्षा के लिये तन, मन और धन समर्पित करेंगे'

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश का वार्षिक शिविर 21 मई से 28 मई तक डीएवी पब्लिक स्कूल श्रेष्ठ विहार में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर का शुभारम्भ माननीय ठाकुर विक्रम सिंह (राष्ट्र निर्माण पार्टी अध्यक्ष) एवं श्रीमती प्रेमलता गर्ग जी (डीएवी श्रेष्ठ विहार प्रिंसिपल) के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहण पश्चात् आमंत्रित अतिथि ठा. विक्रम सिंह, श्रीमती प्रेमलता गर्ग, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, विदुषी माता उषा किरण कथूरिया एवं श्री शिव कुमार मदान जी उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आये हुए समस्त अतिथियों का दल की अधिकारी बहनों ने सैन्य सम्मान के साथ उनका स्वागत अभिनंदन किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक मंगलाचरण व दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ।

ठा. विक्रम सिंह अपने उद्बोधन में वीरांगनाओं को उनकी शक्तियों का बोध कराते हुए नजर आये। श्रीमती प्रेमलता गर्ग ने व्यावहारिक मूल्यों पर प्रकाश डाला तथा धर्मपाल आर्य जी ने वीरांगनाओं के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की। विदुषी माता उषा किरण कथूरिया ने बच्चों को स्व कर्त्तव्य बोध कराया एवं सफल शिविर के लिये मंगल कामना की। मंच संचालन आ. अमृता आर्या (मंत्राणी) एवं लिपिका आर्या (बौद्धिकाध्यक्षा) ने किया। ध्वजावतरण श्री दिनेश आर्य ने किया। अंत में शिविर संचालिका श्रीमती शारदा आर्या ने सभी का धन्यवाद किया। लिपिका आर्या जी ने शान्तिपाठ के साथ उद्घाटन समारोह को विराम दिया। दिल्ली प्रदेश के इस वार्षिक शिविर में प्रतिदिन बौद्धिक सत्र में वीरांगनाओं ने अनेक विद्वानों के माध्यम से भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का आनन्द प्राप्त किया। बैद्धिक सत्र में विशेष सेवाएं डॉ. देव शर्मा ,श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आयुषि रण जी एवं कौशल जी (डीएवी) ने दिया। इस शिविर में लगभग 160 वीरांगनाओं, प्रधान शिक्षक श्रीमान हरि सिंह गुरु जी तथा सह शिक्षिकाएं चन्दा आर्या, डिम्पल आर्या, आशु शर्मा, नीलम आर्या, मीनाक्षी आर्या, पूनम आर्या, स्वेता आर्या एवं रेशमा आर्या जी के सान्निध्य में सैन्य शिक्षा, आसन, नियुद्धम, व्यायाम रेस्क्यू ऑपरेशन, शूटिंग, लाठी, तलवार एवं छुरी के प्रहारों का अनुपम प्रशिक्षण प्राप्त किया। समय-समय पर अतिथिगण एवं अधिकारी वर्ग ने बच्चों का निरीक्षण एवं उत्साहवर्धन किया।

सात दिवसीय शिविर का भव्य समापन समारोह 28 मई को ध्वजारोहण के साथ आरम्भ हुआ। ध्वजारोहण के पश्चात् दीप प्रज्ज्वलन महाशय धर्मपाल जी (एमडीएच) डॉ. प्रेमलता गर्ग, माता कृष्णा ठुकराल, डॉ. रचना चावला, डॉ. राजीव चावला, एस के शर्मा, विनय आर्य एवं वीरांगना दल की अधिकारी बहनों ने मिलकर किया। तत्पश्चात् आये हुए सभी अतिथियों का स्वागत व सम्मान सैन्य अभिवादन के द्वारा वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश की अधिकारी बहनों ने किया।

मंच संचालन आचार्या अमृता आर्या एवं लिपिका आर्या के द्वारा हुआ। कार्यक्रम में वीरांगनाओं के सर्वांग सुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, नियुद्धम, आसन, स्तूप रेस्क्यू ऑपरेशन, शूटिंग, तलवार एवं लाठी का प्रदर्शन विशेष आकर्षण का विषय रहा। श्री एस. के शर्मा जी ने अपने उद्बोधन में 'हम बलवान नहीं वीर बने' कहते हुए वीरांगनाओं को काफी उत्साहित किया। महाशय धर्मपाल जी ने हृदय से वीरांगनाओं को आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने कहा कि दैनिक दिनचर्या घर पर भी पालन करोगे तभी महान बनोगे।

सभी वीरांगनाओं ने संकल्प लिया कि अपने राष्ट्र और संस्कृति की रक्षा के लिये तन,मन और धन समर्पित करेंगे। शिविर में आये अतिथियों ने वीरांगनाओं को पुरस्कार प्रदान किये। समारोह के अन्त में शारदा आर्या जी ने सभी का धन्यवाद किया व ध्वजावतरण गुरु हरिसिंह जी ने किया एवं ससम्मान संचालिका महोदया शारदा आर्या जीको ध्वज समर्पित किया। शान्ति पाठ के साथ समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

– *संचालिका*

आर्य वीरांगना दल के वार्षिक प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी। दीप प्रज्ज्वलन करते महाशय धर्मपाल जी साथ में डी.ए.वी. मैनेजमैंट समिति के पदाधिकारी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं आर्य वीरांगना दल की संचालिका श्रीमती शारदा आर्या एवं अन्य। इस अवसर पर सलामी देती एवं व्यायाम प्रदर्शन करती आर्य वीरांगनाएं।

लू से बचाव हेतु रंगबाड़ी सर्किल आम का शर्बत वितरित

आर्य समाज कोटा व पतंजलि योग समिति की ओर से लू से बचाव हेतु रंगबाड़ी सर्किल पर आमजनों को आम का शर्बत पिलाया। *-अरविन्द पाण्डेय, प्रचार सचिव*

दीवानचन्द गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय, औचन्दी संचालन समिति की बैठक सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा औचन्दी ग्राम में संचालित सेवा प्रकल्प दीवानचन्द गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय, औचन्दी के प्रगति और विस्तार के लिए दिनांक 12 जून 2017 को चिकित्सालय संचालन समिति की एक बैठक चिकित्सालय में आयोजित की गई जिसमें मुख्य सलाहकार डॉ. चन्द्रमोहन भगत, डॉ. शुक्ला जी (माता चानन देवी अस्पताल); चिकित्सालय के चेयरमैन डॉ. अश्वनी जी, मन्त्री श्री महेन्द्र सिंह लोहचब, श्री वेद प्रकाश जी, आर्यसमाज औचन्दी के प्रधान मा. गंगाराम जी, सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी तथा चिकित्सालय से जुड़े अन्य महानुभावों ने भाग लिया।

Veda Prarthana

May We Always be Generous in Our Lives

- Acharya Gyaneshwarya

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र।
सोमिनः। मान्तः स्थुर्नो अरातयः।।

Ma pra gama patho vayam mayajanadindra sominah. Mantah sthurno aratayah.
(*Rig Veda* 10:57:1,
Atharva Veda 13:1:51)

Indram O Master of Prosperity, King of alll kings and Universal Benefactor, *sominah* after we acquire prosperity and benevolence in life, *vayam* may we *ma pra gama patho* never leave the noble path in life and ma yajnad never forget virtuous conduct and being generous in donating to others. *Antah no* inside us *aratayah* miser-liness and other internal enemies such as jealousy, laziness and vanity *ma sthuh* nevr make home or be established,

Dear Supreme Lord, when we compare and evaluate the state (condition) of our present lives to the ideals of life described in the Vedas and related scriptures such as the Principal Upanishads and six *Darshanas*, it is obvious that we have many deficiencies. We can clearly recognize that we have given up on always following the truth, instead we often lie when it appeas convenient. We have given up on Your righteous path for us and the teachings described in the Vedas, or the path told by *rishis* and sages. We no longer follow or emulate the path followed by *devas* i.e. noble persons or a path that will eventually help us truly realize and attain You. Dear God, this is our prayer to You that from now on in future we will always follow Your righteous path.

It is certain that when one strictly follows truth, maintains high standards for persnal moral conduct, treats others with kindness and justice, and understands personal duty, one will encounter many obstacles and difficulties in personal life. When one strictly follows a moral path in life, one will likely encounter opposition and/or accusations from others and one may encounter personal deprivation and suffering. However, one who has realized You as one's Protector and Nurturer, he/she can withstand the hardship because You give and bestow him/her with enlightenment, knowledge, inner strength, courage, bravery, determination, patience and encouragement. With your inspiration we will not be discouraged or dissuaded from following truth and virtuous path in life. We will not stop or bow to ill forces but keep on moving forward with increasing pace and keep progressing following a moral path in life.

Dear God, this is our prayer to You that we may never stop doing physical yajna (havan) to purify the environment and honor our elders, teachers and the learned. May we always give donations for righteous causes, be generous and give selfless service to the needy. May such virtues become an integral component of our daily routine. May everyday of life we perform physical exercise and other activities to make our physical body strong, clean and healthy. After this we pray and meditate to You, read Veda mantras with their meaning as well as other uplifting scriptures do introspection on our faults that need to improve and attend *satsang* (if feasible). Dear God, wealth that is earned by ill means against the teachings of the Vedas does not lead to prosperity in life, but rather becomes a cause of one's downfall and personal disintegration. A person who earns /gathers wealth; achieves a high executive, social or political position; acquires various physical luxuries like a mansion; expensive cars; or a variable combination of all of these by ill means while ignoring moral principles and discipline as well as righteous regulations of the society, such a person while superficially may appear to be successful, in reality gradually becomes inflicted with many vices. Even though such a person may not be self-aware others can observe in his/her thoughts, words and actions that these vices are gradually leading to his personal ruin and destruction. Unfortunately, such a person not only suffers self-destruction but usually leads to the downfall of his/her family and indirectly propagates suffering in the community, society and the nation[1].

Dear God to follow truth and virtuous path in life, it is essential that You help us uproot bad *sanskars* (i.e- *vasana*, root impressions) that have settled in our mind based on our past deeds in this and various previous lives (incarnations). Please help us completely destroy our internal vices/enemies such as miserliness, jealousy, vanity, ungratefulness, laziness, self-pity, deception, cruelty, etc. Dear God, please help us so that through true yoga practic we may successfully eradicate our bad desires and vices just like seed grains (corn) once roasted in fire never germinate again. Otherwise old bad *sanskars* will keep on re-emerging and direct or coax us on the wrong path again just like seeds when given adequate soil and water re-germinate. Our greed, miserliness and jealousy prevent us from being charitable and sharing with the needy even though we see hunger, poverty, suffering and illness around us. Dear God, fill up our souls and minds with such generosity that when we see hungry, poor, ill, unclothed, down trodden persons there is spontaneous outburst in our hearts to help them. May we always be generous and make great effort to use our wealth, knowledge, strength, social position, authority and time for the good and welfare of such persons. Dear God, inspire us so that we strive and aim for the success of others especially the down trodden in achieving fulfillment of their basic needs, good health, education and their becoming participating good members of the society like us.

Dear God, You are the Most Generous Being, the Giver to all givers, there is absolutely no doubt that if we make sincere and consistent effort, by Your Grace we will be successful in eradicating our internal enemies such as miserliness, jealousy self-pity, vanity and others. There is no doubt that by following Your path of truth and virtue not only will we make progress and achieve success in our own lives but also promote progress and succeed in our community, society, nation and the world.

(For explanations of prosperity in the Vedas also see mantra # 3,6,17 and 21)

To be continued

आओ ! संस्कृत सीखें **संस्कृत पाठ - 26**

गतांक से आगे....

संस्कृतं सर्वेषां संस्कृतं सर्वत्र

विमानम्।	**शब्दान् जानीमहे वाक्यप्रयोगञ्च कुर्महे**		विद्युत्कोषः।
उपायनम्।	महिषी।	औष्ठौ (द्वि.व) ।	छूरिका।
यानम्।	अजा।	चपेटिका।	अङ्कनी।
आसन्दः/आसनम्।	कुक्कुटः।	बाहुः।	पुस्तकम्।
नौका।	मूषकः।	नमस्कारः।	कन्दुकम्।
पर्वतः।	मकरः।	पादत्राणम्(पादरक्षकः)।	चषकः।
रेलयानम्।	उष्ट्रः।	युतकम्।	चमसौ (द्वि.व)।
लोकयानम्।	पुष्पम्।	स्यूतः।	चित्रग्राहकम्।
द्विचक्रिका।	पर्णे (द्वि.व)।	ऊरुकम्।	सङ्गणकम्।
ध्वजः।	वृक्षः।	उपनेत्रम्।	जङ्गमदूरवाणी।
शशकः।	सूर्यः।	वज्रम् (रत्नम्)।	स्थिरदूरवाणी।
व्याघ्रः।	चन्द्रः।	सान्द्रमुद्रिका।	ध्वनिवर्धकम्।
वानरः।	तारकः/नक्षत्रम् ।	घण्टा।	समयसूचकम्।
अश्वः।	छत्रम् ।	तालः।	हस्तघटी।
मेषः।	बालकः।	कुञ्चिका।	जलसेचकम्।
गजः।	बालिका।	घटी।	द्वारम्।
कच्छपः।	कर्णः।	विद्युद्दीपः।	भुशुण्डिका।
पिपीलिका।	नेत्रे (द्वि.व)।	करदीपः।	आणिः।
मत्स्यः।	नासिका।		
धेनुः।	जिह्वा।		

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

वे अपने प्रीतम को समझा-बुझाकर सविस्तार अपना वृतान्त सुनाते थे

गुजरांवाला के समीप एक रामनगर कस्बा (पश्चिमी पंजाब में) है। सुप्रसिद्ध आर्यविद्वान् मास्टर लक्ष्मणजी यहीं के थे। इस रामनगर के सज्जन श्री नत्थूराम चावला ने बाल ब्रह्मचारी मुंशी नारायण कृष्णजी के बारे में अपने कुछ संस्मरण लिखे थे। उसमें आपने लिखा था कि वे लिखते भी थे, कथा भी करते थे, आर्यकुमार सभा के सत्संग भी चलाते थे। अनाथालय तथा गुरुकुल का प्रबन्ध भी करते थे और आर्यकुमार जब मिशन स्कूल में किसी प्रश्न का उत्तर न दे पाते तो वे नारायणकृष्णजी को आकर बताते।

श्री नारायणकृष्ण पादरी बरकत मसीह को शास्त्रार्थ के लिए ललकारते। पादरी महोदय उनके तेजोमय मुखमण्डल तथा श्वेतदाढ़ी के कारण उन्हें 'महन्तजी' कहकर पुकारा करते थे।

जब ब्रह्मचारीजी आर्यसमाज के सत्संग में प्रार्थना करवाते थे तो प्रार्थना के शब्द स्वाभाविक रूप से उनके मुख से निकलते थे। उन्हें शब्द खोजने नहीं पड़ते थे। शब्दों के उच्चारण के साथ अपने सिर से ऐसे संकेत किया करते थे मानो वे अपने प्रीतम प्यारे प्रभु को समझा-समझाकर विस्तार से अपना वृत्तान्त बता रहे हों। नत्थूरामजी ने लिखा है कि उन-जैसा मिशनरी तो उस युग में भी मिलना कठिन था।

1903 ई. में जब अब्दुलगफूर (धर्मपाल) की प्रसिद्ध शुद्धि हुई तो कॉलेज पक्ष के आर्यसमाजी भी इसके पक्ष में न थे। यह नारायणकृष्णजी का तपोबल था कि बिरादरियों के विरोध की किंचित् भी चिन्ता न करते हुए अनेक हिन्दू आर्यसमाज के इस शुद्धियज्ञ के समर्थक बन गये। सिख मित्रों ने भी इसका समर्थन किया। पंजाबी के विख्यात कवि कालिदास ने उस अवसर पर शुद्धि तथा ऋषि की प्रशंसा में जो ऐतिहासिक कविता पढ़ी थी, उसकी धूम तो वर्षों तक रही। यह सब-कुछ नारायणकृष्णजी के पुरुषार्थ का फल था। ***साभार :***

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्यसमाज ए.जी.सी.आर. द्वारा पार्क में यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज ए.जी.सी.आर. दिल्ली के तत्त्वावधान में 4 जून 2017 को स्थानीय सैन्ट्रल पार्क में 60 से अधिक उपस्थित व्यक्तियों ने सम्मिलित होकर योगासन, प्राणायाम किया तत्पचात् पर्यावरण शुद्धि यज्ञ सम्पन्न किया जिसमें हरगोविन्द एन्क्लेव, दयानन्द विहार, कृष्णा नगर, जगतपुरी, मंगोलपुरी इत्यादि स्थानों के महानुभावों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। राधापुरी आर्य समाज के मंत्री श्री ऋषिराज वर्मा ने यज्ञ सम्पन्न कराया। स्थानीय सनातन धर्म मन्दिर के मंत्री श्री सुशील गुप्ता ने शुद्ध घी का हलवा बनवाकर प्रसाद वितरित किया। शान्तिपाठ के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- ओम प्रकाश भटनागर, मंत्री

नि:शुल्क आध्यात्मिक आत्मशुद्धि शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में 30 जून से 2 जुलाई 2017 के बीच नि:शुल्क सरल आध्यात्मिक शिविर स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में योग निदेशक स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक दर्शनाचार्य (दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़) होंगे।

-संयोजक

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को निम्न पदों हेतु आवश्यकता है – **1. एकाउटैन्ट -1** (टैली कार्य में निपुण, अनुभव 3 वर्ष,) **2. कम्प्यूटर ऑपरेटर** (अनुभवी/ फ्रैशर) **3. कम्प्यूटर डिजाईनर** (अनुभव 3 वर्ष, कोरल ड्रा)। इच्छुक अभ्यर्थी अपना बायोडाटा ई-मेल करें –

aryasabha@yahoo.com

कॉमशियल ड्राईवर चाहिए

दिल्ली सभा को एक व्यवसायिक वाहन चालक की आवश्यकता है।

सम्पर्क करें:- एस.पी. सिंह, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 मो. 9540040324

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज नोएडा, सैक्टर-33 (उ.प्र.)

प्रधान	- श्री रविन्द्र सेठ
मन्त्री	- श्री कै. अशोक गुलाटी
कोषाध्यक्ष	- श्री नरेन्द्र सूद

आर्य महिला समाज, नोएडा, सै. 33 (उ.प्र.)

प्रधाना	- श्रीमती गायत्री मीना
मन्त्राणी	- श्रीमती आदर्श बिश्नोई
कोषाध्यक्षा	- श्रीमती संतोष लाल आर्या

आर्य समाज मन्दिर मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.)

प्रधान	- डॉ. दक्षदेव गौड
मन्त्री	- डॉ. विनोद आहलुवालिया
कोषाध्यक्ष	- सुश्री सुशीला शर्मा

नि:शुल्क वैदिक ज्योतिष शिविर एवं योग कार्यशाला

आर्य समाज टैगोर गार्डन एवं पतंजलि योग समिति, राजौरी गार्डन के संयुक्त तत्त्वावधान में नि:शुल्क वैदिक ज्योतिष शिविर एवं योग कार्यशाला का आयोजन 28 जून से 2 जुलाई 2017 के बीच प्रात: 11 बजे से सायं 5 बजे तक किया जा रहा है। मुख्य योग शिक्षक श्रीमती उषा सढ़ाना एवं श्री राजकुमार जी होंगे।

- मधु आर्या, मन्त्री

भजन संध्या एवं नव निर्वाचित निगम पार्षदों का अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी में भजन संध्या एवं क्षेत्र के नव निर्वाचित निगम पार्षदों का अभिनन्दन समारोह सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता स्वामी श्री धर्ममुनि दुग्धाहारी जी ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रवेश वर्मा (म.प्र.) विशिष्ठ अतिथि श्रीमती कमल जीत सहरावत, महापौर दक्षिण दिल्ली नगर निगम ने शिरकत की। मार्गदर्शक एवं वक्तव्य दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य प्रधान तथा श्री विनय आर्य, महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिया। मंच संचालन श्री वेद प्रकाश प्रधान बाहरी रिंग रोड ने किया। *- मन्त्री*

आर्यन अभिनन्दन समारोह

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 17 सितम्बर 2017 को दिल्ली में आर्यो का अभिनन्दन किया जा रहा है।

1. जो आर्य व्यक्तिगत रूप से प्रकाशन चला रहे हैं, पत्रिका निकाल रहे हैं, पुस्तक विक्रेता हैं।

2. आर्य समाज के प्रचार में एक ही परिवार से पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन, भाई-भाई आदि वेद प्रचार में लगे हैं।

3. जो पुरोहित एक ही आर्य समाज में 25 वर्ष या उससे अधिक समय से बैठकर सेवा कर रहे हैं।

हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण लिखकर इस पते पर प्रेषित करें-

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट
ए-41, लाजपत नगर-2, नई दिल्ली-24, दूरभाष : 011-45791152, 29842527, मो. 9599107207

सौप्रस्थानिक समारोह सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों का सौप्रस्थानिक समारोह 10 जून 2017 को सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता कुलपति स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने की। उन्होंने अपने आशीर्वचनों में कहा ''ज्ञान की कोई सीमा नहीं है, ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती भी स्वयं ज्ञानसमुद्र में न डूब जाये इस भय से वीणा को धारण करती है तो सामान्य मनुष्य की तो क्या बात है। उन्होंने कहा गुरुकुल में रहते हुए ब्रह्मचारियों ने दस वर्षो में ज्ञानार्जन की योग्यता को ही अर्जित किया है। विद्या का अपार क्षेत्र अभी भी उनके लिए अज्ञात ही है। समारोह में मुख्य अतिथि आर्य समाज थापर नगर मेरठ के प्रधान श्री राजेश सेठी उपस्थित रहे। *- आचार्य*

स्वाध्याय शिविर पौधा, देहरादून में प्राप्त आपकी प्रतिक्रियाएं

⋆ श्रीमद् दयानन्द ज्योर्तिमय गुरुकुल पौंधा के तत्त्वावधान में आयोजित स्वाध्याय शिविर वर्तमान समय में पठन-पाठन में आई शिथिलता को दूर करने की दृष्टि से एक मील का पत्थर सिद्ध होता जा रहा है। शिविर के विषय सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका अच्छे हैं। आयोजन स्थल रमणीय है जो पहाड़ों में स्थित है। योग साधना एवं यज्ञ को भी जोड़ा गया है जो बहुत अच्छा है। शिविर वास्तव में प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा। सफलता का श्रेय निश्चित रूप से दिल्ली सभा मंत्री सुखबीर सिंह शिविर संयोजक को जाता है। साथ ही डॉ. धनञ्जय एवं गुरुकुल प्रबन्धक समिति का व्यवहार और भोजन व आवास व्यवस्था सराहनीय रही है। कुछ सुझाव :- 1. मुख्य वक्ता विद्वान है परन्तु भविष्य में परिवर्तन अपेक्षित है। 2. ध्वनि व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है क्योंकि पीछे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। 3. भविष्य में मोबाईल चार्ज हेतु एक स्थल बनाया जाए जो यज्ञ के समय यज्ञशाला तथा स्वाध्याय के समय उसके समीप बनाया जाए। इससे संख्या में पूर्ण सुधार की सम्भावना बनेगी। *-डॉ. मुकेश आर्य, मंत्री, आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर, दिल्ली*

⋆ इस प्रकार के शिविर ईश्वर की साधना व वेद प्रचार का उत्तम उपाय हैं। इससे आर्यो का मिलन होता है। ज्ञान बढ़ता है। संगठन मजबूत होता है। आर्य समाज के शिविर लगते रहना चाहिये। शिविर लगाने वालों का बहुत-बहुत धन्यवाद।प्रबन्ध बहुत सुन्दर भोजन सात्विक रहा। वातावरण बहुत सुन्दर था।

-सोम प्रकाश आर्य, गांव सांधी हरियाणा

⋆ हमें इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। हमें बहुत अच्छा लगा आध्यात्मिक लाभ हुआ। हम आप सबके आभारी हैं। आशा करते हैं कि इस तरह का कार्यक्रम भविष्य में भी होता रहेगा। हम यथा सामर्थ्य सहयोगी बनेगें। समाज की उन्नति के लिए यह सब आवश्यक है। मेरी शुभकामनाएं।

-आत्ममुनि, कक्केपुर भूमी, मेरठ (उ.प्र.)

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

18वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन : 9 जुलाई, 2017

हम सब मिलकर आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प हैं। इसी निमित्त हम अनेक कार्यों का सम्पादन अपने-अपने आर्य समाजों के माध्यम से निरन्तर कर रहे हैं। आर्यसमाज की विचारधारा व्यक्ति की नहीं परिवार की विचारधारा है। जब तक आर्यसमाज परिवार के साथ नहीं जुड़ेगा तब तक हम सशक्त नहीं हो सकते। इसी क्रम में आवश्यक प्रतीत हुआ कि हमें अधिक से अधिक आर्य परिवारों के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। आर्य परिवारों के सामने एक ऐसे मंच का अभाव सा है जहां वे अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अच्छे वर-वधू का चयन कर सकें। जाति के आधार पर बने अनेक संगठन तो इस कार्य को कर रहे हैं किन्तु वैदिक विचारधारा वाले महानुभाव जिनमे कोई भी जाति का आधार न हो, उनके लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। इस हेतु सभा ने गत 7 वर्ष पूर्व आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलनों के कार्य को आरम्भ किया था। तब से इसकी उपयोगिता के चलते ये निरन्तर चलता चला आ रहा है। इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **18वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन** रविवार दिनांक **9 जुलाई 2017** को प्रात: 10 बजे से **आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी, नई दिल्ली-110018** में आयोजित किया जाएगा।

आर्यजन अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न करके भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजे।

आर्यजनों/पाठकों एवं आर्यसमाज के सभी पदाधिकारियों/सदस्यों से निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में बार-बार इसकी सूचना देवें तथा प्रकाशित फार्म की प्रतियां करके आर्यसमाज में रखवा लेवें, मांगने पर अपने सदस्य को दें और नोटिस बोर्ड पर लगाकर, सदस्यों को यह भी निवेदन करें कि वे अपने सम्पर्क के परिवारों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें। सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक **मो. 9414187428)** — **एस. पी. सिंह**, संयोजक, दिल्ली **मो. 9540040324)**

8 **साप्ताहिक आर्य सन्देश**
सोमवार 12 जून, 2017 से रविवार 18 जून, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 15/16 जून, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 जून, 2017

महिला योग जागृति शिविर सम्पन्न

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ गुजरात में 7 से 11 जून 2017 तक ''महिला योग जागृति शिविर'' का आयोजन किया गया, जिसमें 150 से अधिक कन्याओं और महिलाओं ने भाग लिया। इस शिविर में प्रतिदिन कक्षाओं में आचार्या शीतल जी ने ''सन्ध्या के शुद्ध मन्त्रों का उच्चारण'' और ''जीवन में आध्यात्मिकता की आवश्यकता'' इन विषयों पर मार्गदर्शन दिया। श्रीमती जयाबेन जी ने 'पारिवारिक सुख शान्ति के उपाय' एवं 'गृहस्थ को स्वर्ग कैसे बनाएं' इन विषयों पर प्रवचन दिया। डॉ सद्गुणा जी ने 'ज्ञान, कर्म, उपासना' और 'आत्मनिरीक्षण' विषय पर उपदेश दिया।

श्रीमती सुनीता जी ने आसन व्यायाम आदि के माध्यम से स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान की। श्रीमती राजमल्होत्रा जी ने यम-नियम के विषय में विस्तार से समझाया।

आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी ने प्रतिदिन ध्यान का अभ्यास कराया एवं शाम को प्रेरक प्रवचन के द्वारा पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कर्त्तव्यों के विषय में प्रेरणाएं प्रदान की। f

शविर के समापन समारोह में पूज्य स्वामी सत्यपति जी ने सभी को आशीर्वाद व प्रेरणाएं प्रदान की।

सभी शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये और जिन्होंने अनुशासन आदि का अच्छा पालन किया उनको आश्रम की ओर से पुरस्कार भी प्रदान किये गये। – *आचार्य*

प्रतिष्ठा में,

हार्दिक आभार

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान व आर्यसमाज पंखा रोड जनक पुरी के प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी (75 वर्ष) और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संस्थापक सदस्य तथा आर्य समाज ए.जी.सी.आर. के मंत्री आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर जी (92 वर्ष) अपनी सरकारी सेवा से निवृत्ति के उपरान्त विगत कई वर्षों से आर्य सन्देश के सम्पादन कार्य में क्रमशः माननीय व्यवस्थापक एवं सह व्यवस्थापक के रूप में अपनी निःशुल्क सेवाएं अर्पित करते आ रहे हैं जिसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार आप दोनों महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त करता है। *–सम्पादक*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत
सत्यार्थ प्रकाश
उर्दू भाषा में अनुवाद)
मूल्य मात्र
100/- रुपये
श्री बलदेव राज महाजन जी
आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)
के विशेष सहयोग से
केवल मात्र 70/- में
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. 9540040339

आर्यजनों के लिए खुशखबरी
महर्षि दयानन्दकृत
सम्पूर्ण साहित्य एवं
सत्यार्थ प्रकाश (18 भाषाओं में)
अब सीडी में उपलब्ध

मूल्य मात्र 30/- रुपये

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह